10:37 PM | 0.0KB/s

25 September 2020
22:01

परदा कहानी

लेखकः यशपाल

Scanned by CamScanner

परदा ⟨ शान का प्रतीक / महिलाओं का रक्षक [प्राचीन काल में]

— यशपाल

यशपाल की कहानी 'परदा' दरअसल मध्यवर्गीय समाज की विडंबनाओं की कहानी है। जिन लोगों की सारी कोशिश हमेशा अमीर बनने की होती है, जो खुद से रईस लोगों की दिनचर्या का पालन करते हैं। वे न तो अमीर की श्रेणी में आ पाते हैं न गरीबों की तरह अपनी गरीबी स्वीकार कर जी पाते हैं। इस कहानी का मुख्य किरदार यूँ तो परदा ही है जो एक घर की लाज बचाने की अपने अंतिम रेशे (क्षण) तक करता है पर चूंकि यह परदा चौधरी पीरबख्श के मकान पर टंगा था तो सारा किस्सा उन्हीं की मार्फत चलता है।

चौधरी पीरबख्श की सबसे बड़ी उपलब्धि यह थी कि उनके दादा चुंगी महकमें के दरोगा हुए थे। उनके पास एक मकान था जिसे घर के लोग हवेली की तरह मानते थे।

Scanned by CamScanner

चौधरी
फजलकुर्बान — इलाहीबक्श

~~सेम~~ चौधरी साहब के दो बेटे फिर दोनों बेटों के चार-चार बेटे। परिवार की आबादी में जैसे-जैसे बरकत हुई, जेबें ढीली होती चली गई। इस कहानी के मुख्य किरदार चौधरी पीरबक्श तक पहुँचते पहुँचते हवेली समझा
के बाल-बच्चों
जाने वाला वह मकान उस आबादी को संभालने लायक नहीं रहा। तो बस कहानी के नायक को एक छोटी-सी कच्ची बस्ती में शरण लेनी पड़ी, जहां बुनकर, मोची, दर्जी जैसे मेहनतकश तथा अपेक्षाकृत गरीब लोग रहते थे। उस कच्ची बस्ती में चौधरी पीरबक्श की शान यह थी कि उनके घर के दरवाजे पर एक रंगीन परदा लगा हुआ था, जिसे देख सभी हैरत खाते थे। वह परदा पीरबक्श की शान तथा उसकी इज्जत का रखवाला था। इस सबसे बढ़कर उस परिवार की महिलाओं का रक्षक था। हालत यह थी कि उस घर पर किवाड़ तक नहीं था सो परदे पर ही सारी जिम्मेदारी टंगी थी।

चौधरी पीरबक्श आज के उन तमाम मध्यवर्गीय नौकरपेशा लोगों के समान नजर आते है जो मल्टीनेशनल्स सपने देखता है, पांव जमीन से उखड़ चुके है परंतु फिर भी कपड़े ब्रांडेड ही पहनने होते है, दिखावे का जमाना है। पीरबक्श का परदा भी उनका ब्रांड था। जो एक रोज आंधी की मार झेल नहीं पाता और किसी भी सूरत मे लटकाने लायक नहीं रहता। बड़े सोच विचार के बाद घर की एकमात्र पुश्तैनी दरी को वे दरवाजे पर टांग देते है।

* घर मे 5 महिलाएं थी। जिनके शरीर से कपड़े जीर्ण होते जा रहे थे, जैसे पेड़ अपनी छाल छोड़ देते हैं। घर की आर्थिक स्थिति अत्यंत बिगड़ती गई तथा अब घर मे गिरवी रखने को भी कुछ नही बचा था। वह एक पहलवान (बकरमियां) से कर्ज ले बैठते है। बकरमियां ने जो कर्ज चुकाने की उन्हे मोहलत दी थी, वह भी खत्म हो गई तथा बकरमियां चौधरी साहब के घर पहुंच जाते है तथा पड़ोस मे रहनेवाले मोची तथा अन्य लोग घर के सामने इकट्ठा हो गए। बकरमियां द्वारा पैसे मांगने पर चौधरी पीरबख्श अपनी खाल बेचने की गुजारिश करने लगे। तत्पश्चात बकरमियां ने गुस्से से कहा कि तुम्हारी खाल से अच्छा तो यह परदा है तथा उन्होंने परदा खींच दिया, घर के अंदर का दृश्य असहनीय था। स्त्रियों की नग्नता की झलक से बकरमियां की कठोरता पिघल गई तथा परदे को आंगन मे फेंक कर चले जाते हैं। चौधरी साहब में इतनी भी दम न रहा कि वह अभी पुनः उस परदे को टांग सके। वे शर्म से झुक गए।

निष्कर्ष :- कहा जा सकता है कि अच्छा होता कि चौधरी ने अपने घर की महिलाओं को बाहर निकलने दिया होता। वे भी मेहनत करती तथा घर की रोजी-रोटी मे अपना योगदान देती। परंतु दिखावटी तबके से ताल्लुक रखने वाले चौधरी को यह गंवारा न था। अतः कहानी & climax से पर्दा हट चुका है।